अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2023) दिनांक : 20.12.2023

समय सीमा : 3 घंटा चतुर्थ वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

लघु दण्डक–30

प्र. 1 कोई चार द्वार लिखें– 24

(क) गति आगति द्वार–प्रारम्भ से लेकर तेजस-काय वायुकाय तक लिखें।

(ख) समुद्घात द्वार।

(ग) ज्योतिष देवों की स्थिति।

(घ) अवगाहना द्वार–मनुष्य की अवगाहना।

(ङ) उपयोग द्वार–सात नारकी से प्रारंभ करते हुए अंत तक लिखें।

प्र. 2 कोई दो द्वार लिखें– 6

(क) दृष्टि द्वार।

(ख) प्राण द्वार–पांच स्थावर से प्रारंभ करते हुए अंत तक लिखें।

(ग) तिर्यंच की स्थिति में पांच स्थावर व तीन विकलेन्द्रिय की स्थिति लिखें।

पांच-ज्ञान–30

प्र. 3 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें– 24

(क) अवधिज्ञान के विषयों को द्रव्यतः से प्रारमभ करते हुए भावतः तक लिखें।

(ख) मनःपर्यवज्ञान के प्रथम दो विषयों की विवेचना करें।

(ग) अवधिज्ञान के द्वारा देखने की शक्ति का यंत्र बनाएं।

(घ) दृष्टिवाद उपदेश से प्रारंभ करते हुए सादि व अनादि श्रुत तक लिखें।

(ङ) मनःपर्यव ज्ञान का स्वामी तथा मतिज्ञान श्रुतज्ञान में भेदों का वर्णन करें।

प्र. 4 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर लिखें– 6

(क) नौ निकाय शब्द किनके लिए प्रयुक्त होता है?

(ख) अवधिज्ञान का विषय देवता व नारक में कौन सा व कितने प्रकार का होता है?

(ग) प्रत्येक बुद्ध के नियमतः कौन से श्रुत पूर्व अधीत होते हैं?

(घ) एक समय में एक ही मुक्त होते हैं, उन्हें हम क्या कहते हैं?

(ङ) भव प्रत्ययिक अवधिज्ञान किसे कहते हैं?

(च) अपर्यवसित श्रुत का क्या तात्पर्य है?

(छ) ऋद्धि प्राप्त से क्या तात्पर्य है?

(ज) अनवस्थित अवधिज्ञान से क्या तात्पर्य है?

गीतिका–10

प्र. 5 कोई दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 2

(क) कौन से जीव का अपक्रमण नहीं होता?

(ख) कौन से सिद्ध कितने कर्मों को क्षीण करते हैं?

(ग) मोहनीय कर्म का उपशम निष्पन्न भाव किन गुणस्थानों में होता है?

प्र. 6 कोई दो पद्य भावार्थ सहित लिखें– 8

(क) ज्ञानावरणी.....उपनो रे।

(ख) त्रिण.....लीजो रे।

(ग) संपराय.....पेखो रे।

(घ) दोय भेद.....थायो रे।

पूर्व कंठस्थ ज्ञान–30

प्र. 7 निम्नांकित सभी प्रश्नों के उत्तर दें–

(क) पच्चीस बोल–संवर तत्त्व–तेरहवां भेद 1

अथवा

निर्जरा तत्त्व–नौंवा भेद?

(ख) चतुर्भंगी–सत्रहवां बोल 3

अथवा

बीसवां बोल।

(ग) पच्चीस बोल की चर्चा–चौदहवां बोल–8वां भेद से लेकर अंत तक 3

अथवा

दसवें दण्डक से लेकर 17वें दण्डक तक।

(घ) तत्त्व चर्चा–कर्म पर छह द्रव्य, नौ तत्त्व 3

अथवा

विविध विषयों पर छह द्रव्य नौ तत्त्व।

(ङ) प्रतिक्रमण–प्रतिक्रमण प्रतिज्ञा 2

अथवा

आलोचना सूत्र।

(च) कर्म प्रकृति–मोहनीय कर्म की गुणस्थानों में अवस्थिति–केवल दर्शन मोह की मात्र लिखें। 4

अथवा

चारित्र मोह की प्रकृतियों की स्थिति–अनंतानुबंधी कषाय चतुष्टय के पहले तक लिखें।

(छ) जैन तत्त्व प्रवेश–दृष्टांत द्वार–आश्रव 3

अथवा

षडद्रव्य द्वार–जीवास्तिकाय से लेकर अंत तक लिखें।

(ज) बावन बोल–संवर के बीस बोल कितने भाव कितनी आत्मा? 4

अथवा

दया हिंसा कितने भाव? कितनी आत्मा? तथा छह द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन?

(झ) इक्कीस द्वार–असंज्ञी 4

अथवा

अपर्याप्त

(ञ) जैन तत्त्व प्रवेश–(द्वितीय व तृतीय खंड) श्रावक प्रतिमा द्वार 8वीं, 9वीं व 10वीं प्रतिमा लिखें 3

अथवा

परोक्ष ज्ञान को प्रारम्भ से लेकर सप्तभंगी से पूर्व तक लिखें।